"वैश्वीकरण के पश्चात मध्यप्रदेश का सतत आर्थिक विकास"
GLOBALIZATION AFTER SUSTAINABLE ECONOMIC DEVELOPMENT IN (M.P.)

अनुशंसा (Recommendation)

किसी देश अथवा राज्य के आर्थिक विकास का मुख्य आधार औद्योगिक विकास ऐसी दशा में देश अथवा राज्य के विकास का मानदण्ड औद्योगिक विकास है परंतु समय–समय पर औद्योगिक विकास की मंदी होने पर देश अथवा प्रदेश की अर्थव्यवस्था में मन्दी दिखने लगती है। वैश्विक स्तर पर इस समस्या से विभिन्न देश जूझ रहे है जिसका प्रभाव भारत एवं उससे जुड़े राज्यों पर भी पड़ रहा है। वर्तमान परिदृश्य के अन्तर्गत मध्यप्रदेश राज्य, औद्योगिक मंदी के दौर से गुजर रहा है, अर्थव्यवस्था में भी गिरावट प्रदर्शित हो रही हैं। जिसके कारण रोजगार में कमी, गरीबी में वृद्धि हो रही है। मध्यप्रदेश भारत के क्षेत्रफल की दृष्टि से दूसरा बड़ा राज्य है, जो कि भारत के ह्रदय में बसता है यह ग्रामीण पृष्ठभूमि वाला राज्य है। जहॉ विकास की अपार संभावनाओ के बावजूद आपेक्षित विकास को प्राप्त करने में हम असफल रहें है। मध्यप्रदेश सरकार ने समय–समय पर औद्योगिक विकास मन्द गति की ओर चला गया।

मध्यप्रदेश में औद्योगिक मन्दी के कुछ कारण निम्न है –

1. **संसाधनो का अभाव**–पश्चिमी मध्यप्रदेश के संसाधनों का अभाव मध्यप्रदेश की औद्योगिक दृष्टि से पिछड़ा रहने का कारण है क्योकि पश्चिमी मध्यप्रदेश में विकसित जिले आते है, जहां पूजी की अधिकता होने के बावजूद संसाधनो में कमी की वजह से औद्योगिक विकास अवरूद्ध हो रहा है। मध्यप्रदेश विभाजन वर्ष (2000) के पूर्व प्रदेश में कोयला, जल, लोहा, इस्पात पर्याप्त मात्रा में थे। विभाजन के पश्चात संसाधनो का मुख्य स्त्रोत छत्तीसगढ़ राज्य में चला गया जबकि उत्पादन क्षमता मध्यप्रदेश में विद्यमान रह गई। प्राकृति संसाधनो की उपलब्धता में कमी होने के कारण मध्ययोग है।

2. **प्रौद्योगिकी की कमी**–मध्यप्रदेश मेंप्रौद्योगिकी में कमी का मुख्य कारण तकनीकी शिक्षा का गुणवत्ता पूर्ण न होना है, जिसके फलस्वरूप जिस लाभ की हमें आकांक्षा होती है वह हमें प्राप्त नहीं होता है। प्रौद्योगिकी का अभाव इसके औद्योगिक विकास को धीमा करता

है पुरानी तकनीक से उत्पादन क्षमता कम रहती है इसकी वजह से हमारे उद्योग पिछड़े हुए है। जिसके लिए जिम्मेदार, अनुसंधान एवं विकास पर खर्च में कमी हैं।

3. पूॅजी की कमी—किसी भी औद्योगिक विकास के लिए पूंजी महत्वपूर्ण तत्व है। पूजींगत संसाधनों को खरीदने के लिए एक मजबूत अर्थतन्त्र की आवश्यकता होती हैं। ग्रामीण स्तर से महानगर तक उद्योगों को स्थपित किया जा सकता हैं।

मध्यप्रदेश में पूॅजी की कमी पायी जाती है जिसका मुख्य कारण यहाँ की कुल कार्यशील जनसंख्या का 72%ग्रामीण क्षेत्रों में निवास करते है। करना जो कृषि सहायक कार्यो में लगे होते है और उनकी जो आय होती है शहरो की अपेक्षा कम होती है जिससे उनकी आय उपभोग में ही व्यय हो जाती है तथा वचत न होने के कारण मध्यप्रदेश में पूॅजी निर्माण की गति रूक जाती है।

4. **परिवहन साधनों का समुचित विकास न होना**—औद्योगिक विकास के लिए एवं उसकी गति को त्वरित करने के लिए परिवहन के संसाधन अति महत्वपूर्ण है। जिस प्रकार शरीर में धमनियां रक्त प्रवाह को बनाए रखती है, उसी प्रकार अर्थव्यवस्था में परिवहन के साधन, संसाधनो के प्रवाह को बनाए रखते हैं। मध्यप्रदेश में औद्योगिक मंदी का एक प्रमुख कारण यातायात संसाधनो का समुचित विकास न होना है। पठारी क्षेत्र होने के कारण सडक एवं रेलमार्ग के निर्माण में बाधा पहॅुचती है तथा माल की ढुलाई एवं कच्चेमाल की आपूर्ति के लिए लागत बढ़ जाती है।

5. **सामाजिक कारण**—भारत एक विवधताओं वाला राष्ट्र है यह विविधता मध्यप्रदेश को और अधिक विविध बना देती है, क्योकि यह प्रदेश जनजातियो का प्रदेश है यहां के जनजातियो की संख्या 2011 के जनगणना के अनुसार 21.10 %है। जनजातियों का निवास स्थान साधरणतः जंगल होता है जहां वे अपने आप को प्रकृति का हिस्सा मानते है जिससे उनके बीच औद्योगिकरण एवं विकास की अपेक्षा नहीं होती हैं।

6. **सामाजिक, आर्थिक, दर्षाए**— किसी भी उद्योग को विकसित करने के लिए मॉग का होना आवश्यक होता है। जबकि मॉग के लिए समाज में आर्थिक क्षमतॉए होनी चाहिए। मध्यप्रदेश में उच्च गरीबी (लगभग 31 %) एवं निम्न आर्थिक क्षमता, स्थानीय एवं घरेलू मॉग को मन्द गति का कारण है, जिसके कारण औद्योगिक विकास की गति धीमी है।

7. **विदेषी निवेष की कमी**–जैसा कि हम जानते है कि निवेश उद्योगों की आत्मा होती है अतः समय–समय पर हमें देशीय, सरकारी एवं विदेशी निवेश की आवश्यकता होती है। मध्यप्रदेश का दुर्भाग्य रहा है कि यह विदेशी निवेश की कमी की समस्या से हमेशा ग्रसित रहा है।

8. **साक्षरता की दर कम होना**–औद्योगिक विकास के लिए कुशल श्रमिकों की आवश्यकता होती है। जिनको हम शिक्षित और प्रशिक्षित करके कुशल बना सकते है। साक्षरता एक महत्वपूर्व सोपान है जिससे औद्योगिक विकास प्रभावित होती है। वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार मध्यप्रदेश की साक्षरता दर 70.60%थी, जिसमें पुरुष (80.5%) एवं महिला साक्षरता (60%) में असमानताएँ है।

9. **युवा उद्यमियों की कमी**– युवा शक्ति राष्ट्र शक्ति होती है। युवाओं में जोखिम उठाने की प्रवृत्ति अधिक पायी जाती है। यदि युवा शक्ति औद्योगिकरण में अपना हाथ बटा ले तो निश्चित रूप से औद्योगिकरण की गति तीव्र हो सकती है, पंरतु मध्यप्रदेश में युवा उद्यमियों की कमी, औद्योगिक विकास की गति को कम करती है।

10. **अनुसंधान की कमी**–औद्योगिक विकास खनिज संसाधनो पर निर्भर करता है जिसके लिए समय–समय पर अनुसंधान आवश्यक होता है, जिससे खनिज की गुणवत्ता एवं उपयोगिता का पता चलता है। मध्यप्रदेश में औद्योगिक मंदी का एक प्रमुख कारण अनुसंधान की कमी भी है।

औद्योगिक विकास का भविष्य में होने वाले प्रभाव –

मध्यप्रदेश में औद्योगिक विकास की प्रकिया 1961 ई0 में प्रारम्भ हुई थी किन्तु राज्य के प्राकृतिक संसाधनो का उपयोग पर आधारित राज्य की प्रथम औद्योगिक नीति 1972 ई0 से प्रारम्भ हुई थी। मध्यप्रदेश में औद्योगिक विकास के निम्न सुझाव है–

1. राज्य के प्राकृतिक संसाधनो और मानव संसाधनों का अधिक उपयोग करना जिससे औद्योगिक विकास की गति को तेज किया जा सके।

2. तीव्र गति से औद्योगिकरण के उद्देश्य से शासन द्वारा उद्यमियों को अनेक प्रकार की सुविधाए प्रदान की जाए। जैसे उद्यमियों को भूमि की सुविधा प्रदान की जाए,

नए उद्यमियो को न्यूनतम ब्याज दर पर ऋण की सुविधा उपलब्ध कराई जाए, पूंजी अनुदान एवं बिक्री कर में छूट प्रदान की जाए।

3. अनुसूचित जाति, जनजाति, महिलाओं, पिछड़े वर्गो तथा गरीबी रेखा से नीचे जीवन यापन करने वाले लोगो को कौशल विकास हेतु प्रशिक्षित किया जाए, जिससे वे लोग उद्यमिता विकास में सहायक हो।

4. मध्यप्रदेश में कुटीर उद्योग जैसे खादी, ग्राम उद्योग हथकरधा उद्योग, शिल्प एवं हस्तशिल्प को संरक्षण देना तथा इसके विकास पर, सार्वजनिक एवं निजी क्षेत्रो को ध्यान देना चाहिए।

5. विदेशी निवेशक तथा प्रवासी भारतीयों को आकर्षित करने हेतु विश्व–स्तरीय आधारभूत संरचना को विकसित करना।

6. वर्तमान युग, नई तकनीकी एवं संचार का युग है इसलिए नवीन संसाधन की खोज, उत्पादन एवं वितरण में आधुनिक उपकरणों, जैसे आटोमेटिक मशीन कम्प्यूटर आदि का अधिक से अधिक उपयोग किया जाना चाहिए, जिससे धन, श्रम और समय की बचत होगी।

7. औद्योगिकरण के लिए परिवहन संसाधन, आधारभूत इकाई है इसलिए रेल परिवहन व सड़को का विकास तीव्र गति से होना चाहिए।

8. सेटलाइट के माध्यम से खनिजों एवं संसाधनो की मैपिंग करना चाहिए। जिन क्षेत्रो में उनसे संबंधित उद्योगो को स्थापित करने का प्रयास किया जाए।

9. स्थानीय लोगों के बीच विश्वास का वातावरण बनाना और उनकी सुरक्षा तथा रोजगार को संरक्षित करना इसके लिए सरकार को यहाँ के लोगो को शिक्षित करना चाहिए और औद्योगिक विकास के संदर्भ में जागरूक करना चाहिए।

10. पहले से स्थापित स्पेशल इकोनामिक जोन (SEZ) को विस्तृत किया जाए एवं नए स्पेशल इकोनामिक जोन (SEZ) स्थापित किए जाए।

11. मध्यप्रदेश में 26 औद्योगिक विकास केन्द्र है जिसमें 20 राज्य सरकार द्वारा एवं 6 केन्द्र सरकार द्वारा संचालित होते है। इन उद्योगों के विकास के लिए केन्द्र सरकार की भूमि को बढ़ाया जाए एवं राज्य सरकार अपने बजट से ज्यादा से ज्यादा धन इन केन्द्रों को प्रदान करने का प्रयास करें।

12. सरकार की उद्योग नीति को क्रियान्वयन की प्रक्रिया को आसान बनाना चाहिए एवं लोगो को जागरूक करना चाहिए।

13. एकल खिड़की योजना को मजबूत करना एवं व्यापक बनाना चाहिए एवं उच्च तकनीकी का प्रयोग करना चाहिए।

14. सिगिंल टेबिल बोर्ड प्रमोसन पालसी प्रोजेक्ट के लिए 10 वर्ष तक इन्ट्री टैक्स की छूट देना चाहिये।

15. जिला स्तर पर हाई पावर कमेटी को गठन कर औद्योगिक सुविधाओं का विस्तार करना।

उपरोक्त तथ्यों का अध्ययन करने से स्पष्ट होता है कि भारत में मध्यप्रदेश 07 वें राज्य के श्रेणी में आता है यदि उक्त सुझावों को अपनाया जाता है तो औद्योगिक मंदी से निकलने में सहांयता मिलेगी।

*****